17.29 hrs.

*SALE OF TONIC UNFIT FOR CHILDREN

डा० राम मनोहर लोहिया : (फर्रुखाबाद) : उपाध्यक्ष महोदय, जिस बहस को हम लोग इस वक्त ले रहे हैं उस के चार मुख्य अंग हैं बच्चों की दवा और तन्दरुस्ती पर हमला, दूसरे पुलिस, दवा इंस्पैक्टर और वित्त मंत्रालय की ओर से अपराध पर पर्दा। तीसरे मुनाफा और एकाधिपत्य का मुनाफा। और चौथे, नाजायज विदेशी मुद्रा का अर्जन।

इसी तरह से इस बहस में चार मुख्य पात्र हैं। एक तो इस दवा को शुरू से ही बनाने वाली विदेशी कम्पनी वुडवर्ड ग्राइप वाटर कम्पनी, और उस के साथ बंधी हुई तीन कम्पनियां, टी० टी० कृष्णमाचारी कम्पनी, आरिएंट फारमा कम्पनी और एंग्लो थाई कारपोरेशन।

जो मामला इस वक्त उठा है उस पर डा० सुशीला नायर और उन के मंत्री ने बोलते हुए कहा था। छोटी गलतियां मैं मामूली तौर से बतलाए देता हूं। दो सूबों में आन्ध्र में और उड़ीसा में यह मामला उठा था। वास्तव में, जब उन्होंने जवाब दिया था अप्रैल 15 को, उसके पहले मैसूर में भी यह मामला आ चुका था, मैसूर सरकार और मैसूर रेडियो से यह इत्तला दे दी गयी थी।

इसके अलावा यह तीन खेप दवा का मामला है। मैं नहीं कह सकता कि एक एक खेप में दस दस हजार बोतलें थी या पचास पचास हजार या एक एक लाख बोतलें थीं मैं अंदाजा लगाता हूं कि तीनों खेपों में मिला कर डेढ़ लाख बोतलों का मामला होगा लाख बोतलों के नतीजे से हमारे नन्हें बच्चों की तन्दुरुस्ती पर क्या असर पड़ा होगा, इसका आप खुद ही अन्दाजा लगा लीजिए, और रुपए के हिसाब में भी दो लाख का हो सकता है, पांच लाख का मामला हो सकता है।

अब एक बड़ी विचित्र बात इस सम्बन्ध में श्री नस्कर जी ने कही थी। उन्होंने मद्रास के औषधि नियंत्रक को यह खेप भेजी थी [redacted] पकड़ी गयी, और यह मामला जनवरी [redacted], वह जवाब दे रहे हैं अप्रैल में, यानी ढाई महीने के बाद। उनके वाक्य में आप को पढ़ कर सुनाए दूं :

> "The Madras Drug Controller has been asked to verify whether these bottles have originally been manufactured by the original manufacturers or not, but no report has yet come."

फरवरी, मार्च आधा अप्रैल, शायद अब भी वही मामला है।

आप अच्छी तरह जानते हैं कि औषधि के बेचने वाले, कैमिस्ट, ड्रगिस्ट वगैरह लाइसेंस पर काम करते हैं, हर एक चीज उनको लिखनी पड़ती है, कहां से दवा लाए, किस को बेची। यह नामुमकिन है कि ढाई महीने तक पता न लग पाये कि मामला क्या हुआ, जाने बीस हजार या पचास हजार या एक लाख बोतलों का मामला है। यह मालूम नहीं हो सका, तो दाल में कहीं काला है, और वह कहां काला है इस पर जब हम सोच विचार करते हैं, तो फिर मैं आप से कहना चाहता हूं उस खतो किताबत के बारे में जो मेरी या बोस्तों की श्री वित्त मंत्री से हुई।

मैं एक सादा आदमी हूं, सादी बातें करता हूं, लेकिन यह पेच की दुनिया है, और जब तक कोई पेच वाली बातें नहीं करता तब तक उसको लोग ठीक तरह से सुनते नहीं। और कभी भी मैंने अपनी जिन्दगी में किसी से द्वेष में कोई बात नहीं कही है, सार्वजनिक प्रश्नों पर किसी को छोड़ा नहीं है यह बात तो है। आज तो मेरे मन में श्री वित्त मंत्री के खिलाफ गुस्सा है और जबरदस्त गुस्सा है, लेकिन मैं समझता हूं कुछ महीनों में वह खत्म हो जाएगा, क्योंकि हर एक आदमी यहां यह समझ ले कि जो कुछ मैं करता हूं सार्वजनिक

*Half-An-Hour Discussion.

[डा० राम मनोहर लोहिया]

उद्देश्य से, बदनाम जरूर हो जाता हूं और मैं कहता हूं कि कोई आदमी इस गलत और झूठे अस्त्र का मेरे खिलाफ प्रयोग मत किया करो।

अब मैं उन चिट्ठियों की तरफ आता हूं जो मेरे पास आयी हैं श्री कृष्णामाचारी साहब और उनके वित्त मंत्रालय की तरफ से। तो सबसे पहले 9 अप्रैल को श्री कृष्णामाचारी साहब ने कहा कि उन्होंने अपने लड़कों से सब व्यापारी सम्बन्ध तोड़ दिए हैं कई साल से, उनके व्यापारी कामों में कोई दिलचस्पी नहीं लेते, और इस लिए इन कम्पनियों के बारे में वह कोई इत्तला दे नहीं सकते।

फिर अप्रैल 24 को वह लिखते हैं, कृष्णामाचारी साहब खुद कि मैंने डाइरेक्ट टेक्सेज़ बोर्ड को कहा है कि वह एक जवाब भेज दें। ये दो वित्त मंत्री जी के जवाब हुए, और यह दूसरा जवाब तब आया जब रामसेवक यादव ने लिखा कि अगर जवाब नहीं दिया गया तो वह मान लेंगे कि सब बातें सच्ची हैं और आपके पुत्रों ने पिछले कई वर्षों में करोड़ों रूपए इस तरह कमाए। तब 30 अप्रैल को बोर्ड आफ डाइरेक्ट टैक्सेज़ ने लिखा। मुझे अफसोस है कि मुझे अंग्रेजी पढ़नी पड़ती है। उन्होंने लिखा:

"The Ministry does not have information regarding sales, profit and loss or financial position of individual companies nor does the law permit the Ministry to obtain such information."

इतना बड़ा मामला है, इतना बड़ा अपराध है, बच्चों की दवा के सम्बन्ध में अपराध है, औषधि कंट्रोलर नहीं पता लगा पाता। ढाई महीने तक डा० सुशीला नायर की चिट्ठी के ऊपर मद्रास में कोई कार्रवाई नहीं होती है, और यहां वित्त मंत्रालय की तरफ से बड़े से बड़े अफसर जवाब देते हैं कि हम कुछ नहीं बता सकते।

हमें अपना कर्तव्य करना है एक संसद सदस्य की हैसियत से, और वित्त मंत्री को करना है, एक वित्त मंत्री की हैसियत से और एक पिता की हैसियत से उन लोगों के जो यह कम्पनियां चलाते हैं। वित्त मंत्री की हैसियत से उन्हें यह देखना चाहिए कि इन मामलों में जो अपराध हुए हैं उन में वही कार्रवाई करें जो और किसी के खिलाफ किया करते है, और वह क्या होती है?

यह वुडवर्ड ग्राइप वाटर कम्पनी है एक अंग्रेजी कम्पनी है, उसका एंग्लो थाई कारपोरेशन के साथ समझौता हुआ है। एंग्लो थाई कारपोरेशन कुछ दवा नहीं बनाता। एक आरिएंट फारमा कम्पनी है, वह दवा बनाती है, टी० टी० कृष्णामाचारी एंड कम्पनी उस दवा को बेचते हैं। ये जो तीनों कम्पनियां है टी० टी० कृष्णामाचारी की, वह एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं। नफा पांच दस सैकड़ा होता है तो भी काफी होता है। एक तो आरिएंट फारमा कम्पनी जो दवा बनाती है और दूसरी टी० टी० कृष्णामाचारी कम्पनी, जो दवा को फैलाती है, वितरण करती है। लेकिन एक मजेदार बात है कि एंग्लो थाई कारपोरेशन कुछ नहीं करता, वह खाली वुडवर्ड ग्राइप वाटर कम्पनी के साथ समझौता किए हुए है, और जो नफा वुडवर्ड ग्राइप वाटर कम्पनी को मिलता है—और कितना मुनाफा मिलता होगा इसका आप अन्दाजा लगा सकते हैं—उसमें हिस्सा ले लेता है। आप जानते हैं कि दवा में कितना मुनाफा होता है। जो दवा दो आने की बनती है वह हमें 12 आने या एक रुपए में खरीदनी पड़ती है। मैं माने लेता हूं कि बहुत नफा है। दो रुपए दस पैसे में मिलती है, तो इसमें एक रुपए या सवा रुपए का कम से कम नफा है, और बच्चों की तन्दुरुस्ती को ले कर है। मान लीजिए कि 50 हजार बोतलें हैं, एक करोड़ हों, मैं नहीं कह सकता, उनको खबर देनी चाहिए थी कि एक करोड़ है या दो करोड़। मान

लीजिए कि पचास लाख या बीस लाख या तीस लाख मुनाफा है। इतनी विदेशी मुद्रा की राशि इंग्लैंड जाती है, और वहां पर, सब से मजेदार बात यह है कि एंग्लो थाई कारपोरेशन और वुडवर्ड ग्राइप वाटर कम्पनी दोनों में आपसी बटवारा हो जाता है, आधा आधा। मैं अन्दाजा ही लगा सकता हूं कि पचास लाख हो या एक करोड़ हो। और इस प्रकार इन कम्पनियों द्वारा बहुत ज्यादा विदेशी मुद्रा का नाजायज अर्जन हो रहा है।

और इस सम्बन्ध में भी मैं ने रिजर्व बैंक आफ इंडिया को चिट्ठी लिखी थी कि बताओ कि कितना पैसा जाता है विलायत वुडवर्ड ग्राइप वाटर कम्पनी की तरफ से। उन्होंने अब तक कोई जवाब नहीं दिया। उनको कह दिया गया था कि लोक सभा के एक सदस्य की हैसियत से देश के हित में यह जानकारी आपसे पूछ रहा हूं। फिर भी उनका कोई जवाब नहीं आया। तो मुझे दावे के साथ कहना पड़ता है कि सारा सिलसिला अपराध के ऊपर परदा डालने के लिए हो रहा है। नाजायज विदेशी मुद्रा का अर्जन, एकाधिपत्य मुनाफा। जिन जिन चीजों को वित्त मन्त्री इस सदन में कहते हैं कि वह हिन्दुस्तान से खत्म करना चाहते हैं, उन उन चीजों को उनके परिवार की कम्पनियां बहुत समय से और पूरी तरह से चला रही हैं और वह भी बच्चों की औषधि को लेकर के। यह एक खतरनाक बात है जो आपके सामने मैंने रक्खी है। तो फिर मैं यह नहीं कहना चाहता कि खाली जांच से काम चल जायेगा। जांच बहुत जरूरी हो गयी है और वित्त मन्त्री पर आप जांच बिठा दीजिये। मामला उनका बहुत आगे बढ़ गया है। अब वह छिपा भी नहीं सकते। एक जांच बिठाई जाय सारी बातें पता चलेंगी कि उनके परिवार ने उनके जरिए से कितना मुनाफा कमाया है? लेकिन मैं यह जरूर कहना चाहूंगा कि इस तरीके की जांच से ज्यादा लाभ नहीं हुआ करता है। हम हजार जांच जब मांगते हैं तो एक मिल जाया करती है। जब मिल भी जाती है तो कैरो साहब जैसे निकल जाते हैं। उसके बाद फिर यही सरकार पार्टी घमण्ड और शेखी बघारती है कि देखो हम कितने ईमानदार हैं, बेईमान आदमी को निकाल दिया? इसलिए आप मुझ को उनमें न समझियेगा जो एक जांच से प्रसन्न हो जाया करते हैं फिर भी कुछ जांच निहायत जरूरी है। असल जवाब इसका दूसरा है और वह है जब्ती पिछले 15–17 वर्षों में जिन जिन मन्त्रियों की दो पीढ़ी के परिवारों ने धन इस ढंग से कमाया है वह राष्ट्र और देश के नाम पर पूरा पूरा जब्त हो जाना चाहिए। मुझे उससे कोई मतलब नहीं कि उनको सजा मिलती है या नहीं लेकिन उनका धन जब्त हो जाना चाहिए। यह श्री कृष्णमाचारी साहब समझ लें कि उनसे मुझ को कोई द्वेष नहीं है। मैं यह बात सभी के लिए कह रहा हूं कि जैसे मान लो, एक मुख्य मन्त्री के सम्बन्ध में मैं आप को बतला दूं कि यहां तक मामला आया है कि उनके लड़कों को तीन ट्रक टाटा ने दिये जिनको कि उन्होंने चोर बाजारी में बेचा। उन को चावल मिल के लिए लाइसेंस दिया गया जबकि केन्द्र और प्रान्त का फैसला था कि न दिया जाये। उनके एक लड़के ने ट्रक, सीमेंट की चोरी की और मामला दबा दिया गया।

The Minister of Health (Dr. Sushila Nayar): May I request you to give your guidance, and say whether this is relevant? We are talking of some drugs and some spurious samples that were seized. How do the licences for rice and all kinds of things come into this?

Mr. Deputy-Speaker: It is Dr. Lohia's way.

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : विदेशी मुद्रा की चोरी का मामला है।

डा० राम मनोहर लोहिया : देखिये डा० सुशीला नायर जी, मैं आप को बतलाऊं। पिछली दफा भी आप कुछ नहीं समझी थीं। इन्होंने मुझ से पिछली दफे कहा था कि इस

[डा० राम मनोहर लोहिया]

तरह से असली निर्माता नकली लेबल लगा कर अपनी चीज क्यों बेचेगा ? . . .

अध्यक्ष महोदय : डाक्टर साहब यह ग्राइप वाटर के सम्बन्ध में चर्चा है ।

डा० राम मनोहर लोहिया : ग्राइप वाटर से तो यह सारी बातें उठती हैं, भ्रष्टाचार, एकाधिपत्य, नाजायज मुनाफ़ा और विदेशी मुद्रा की चोरी । ग्राइपवाटर के बारे में मैं बतलाता हूं । जब मैंने पिछली दफ़े इसका जिक्र किया था कि जो असली बुडवर्ड ग्राइप वाटर बनाने वाले हैं वह खुद इस नकली चीज को बनाते हैं तो डा० सुशीला नायर को बहुत अचरज हुआ कि वह नकली क्यों बनाने लगे ? वह इतनी बेचारी नादान हैं कि उनकी समझ में यह नहीं आ सका कि वे नकली क्यों बनायेंगे ? मैं उनको बतलाता हूं कि वह नकली क्यों बनाने लगे ? वह सिर्फ दो, चार या दस पैसे के मुनाफे के लिए इसे नहीं बनाते हैं । लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि नकली दवा वह असली कम्पनी बना सकती है । एक, तो बोतल के ऊपर 5–10 पैसे की नकली दवा बना कर इस मुनाफ़े के लिए वह बना सकती है, दूसरी बात आयकर से बचने के लिए बना सकती है क्योंकि अगर बिल्कुल खुल कर बनायेगी तो उसके ऊपर तो आयकर देना होगा । इस तरह वित्त मन्त्री साहब को आयकर से बचत हो जायगी । तीसरी बात वह बनायेगा इसलिए कि बुडवर्ड ग्राइप कम्पनी को भी कुछ साझेदारी देनी पड़ेगी न ? और यह जो तीन, चार या दस लाख बोतलें बना दी गई हैं उसमें जब एंग्लो थाई कम्पनी यहां अंग्रेजों से एक तरफ़ तो कुछ लेती भी है उसी तरीके से दूसरी तरफ़ कुछ देती भी है । वह पैसा बच जायेगा । यह सारी पेंच की दुनिया हो गई है डा० सुलशीला नायर, इसे आप इतनी आसान मत समझना । मैं आप को बतला रहा था कि किस तरीके से . . .

उपाध्यक्ष महोदय : डा० साहब के पन्द्रह मिनट हो चुके हैं ।

डा० सुशीला नायर : उन्हें अपनी बात पूरी कह लेने दीजिये ।

डा० राममनोहर लोहिया : डा० सुशीला नायर मुझे और समय देने की सिफारिश कर रही हैं तो मुझे थोड़ा समय तो मिलना ही चाहिए ।

उपाध्यक्ष महोदय : यह आध घंटे की चर्चा है ।

डा० राम मनोहर लोहिया: ठीक है बस मैं दो मिनट के अन्दर समाप्त किये देता हूं । एक बात यह है कि खर्च पर रोक हो हजार दफ़े मैंने इसको रक्खा है । इसके अलावा हैसियत का मामला है । अब हैसियत के मामले में यह बात है कि बुडवर्ड ग्राइप वाटर को लेकर जो तीन कम्पनियां हैं कृष्णमाचारी साहब की उसके सम्बन्ध में मुझे कहना है यह कृष्णमाचारी साहब वित्त मन्त्री की नहीं उनके पुत्रों की कम्पनियां जिनके कि बारे में वह हमेशा यहां कहते हैं और मुझ को झूठा बनाते हैं कि वह बीस, तीस लाख की हैसियत के हैं तो मैं बतलाना चाहता हूं कि कैम्फर एण्ड ऐलाइड प्रोडक्ट्स लिमिटेड में वितरकों का 30 लाख रुपया जमा है । यह खाली एक कम्पनी की स्थिति है। मैं तो उनके बारे में गलती कर रहा था क्योंकि 3, 4 करोड़ की उनकी हैसियत होगी बल्कि 10 या 15 करोड़ की हैसियत होगी और अब शायद और भी ज्यादा हो क्योंकि आप को यह देखना चाहिए कि जो आमदनी होती है मान लो किसी के पास पैसा नहीं है, आमदनी होती है तो उस पर जो चालू ब्याज की दर होती है उसकी पूंजी उसके हिसाब से समझी जाती है । मान लो मेरी एक लाख की आमदनी है तो चालू ब्याज की दर से सवा करोड़ की हैसियत हो गई । 17 वर्ष के बाद आज मैंने एक कुकर्म किया और सुबह पहले चला गया था प्रधान मन्त्री के पास इसलिए कि मेरे मन को चोट लग रही थी कि 17 वर्ष से हमारी जमीनें छिनतीं चली जा रही हैं । अब उनसे मैंने कहा

कि हिन्दुस्तान सड़ गया है उसको बचाने की कोशिश करो । सेना तक सड़ान चली गई है । नानावती और सिलविया के मामले में जितना प्रेम का मामला था उससे ज्यादा हीरे, मोती का मामला था । दुनिया सड़ चुकी है और भी सड़न चल रही है तब प्रधान मन्त्री ने जो कुछ मुझ से कहा उन की बात तो मैं आप से नहीं कहूंगा लेकिन मैंने उनसे यही कहा कि जितनी मुसीबत हमारे ऊपर है, चारों तरफ से हमारे जुड़े हुए दुश्मन हम पर हमला कर रहे हैं लेकिन ऐसे मौके पर भी अपने देश को पवित्र करने की कोशिश करो तब तुम जीतोगे वरना तुम खत्म हो जाओगे । बस इतना मुझे आप से कहना है ।

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshangabad): The minister stated on the last occasion, when the question was raised in the House, that three batches of this so-called tonic were found to be spurious and unfit for human consumption. But actually the main answer was to the effect that only two batches were seized. I do not know how it came about that though three batches were found to be spurious and unfit for human consumption, only two batches were seized by the State authorities. What happened to the third batch? Is it still in circulation and being sold by the dealers? Why have the dealers not been arrested for selling this spurious product? Has any enquiry been made as to whether manufacturers, the Anglo-Thai Corporation also have been making this unfit tonic or whether only the dealers have committed the offence of adulteration?

श्री किशन पटनायक (सम्बलपुर) : मैंने सवाल पूछने के लिए नाम भेजा था ।

श्री ओंकार लाल बेरवा (कोटा) : नाम मैंने भी अपना भेजा था ।

Mr. Deputy-Speaker: I have got only two chits from Mr. Kamath and Mr. Yashpal Singh; no other chits. The rule is it must be given before the discussion begins.

श्री किशन पटनायक : रूल्स में देखिये कि पूछने के पहले नाम भेजा जाता है और उसके मुताबिक मैंने नाम भिजवा दिया है ।

Mr. Deputy-Speaker: It means, previous to the discussion.

श्री किशन पटनायक : ऐसा कोई रूल नहीं है कि प्रीवियस टु दी डिस्कशन हो । सवाल पूछने के पहले नाम भिजवा देना चाहिए जो कि मैंने किया ।

श्री मधु लिमये : मैं आपकी अनुमति से सवाल पूछना चाहूंगा ।

Mr. Deputy-Speaker: That is my interpretation.

Mr. Deputy-Speaker: The procedure has been that it should be given before the discussion begins.

श्री यशपाल सिंह : (कैराना) : क्या सरकार की इससे भी बड़ी कोई अयोगता हो सकती है कि इतने दिन तक यह आर्टिफिशल दवाई बिकती रही और बच्चों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ होता रहा—यह सब कुछ अनर्थ होता रहा, लेकिन उसके बावजूद भी सरकार आज तक यह पता नहीं लगा सकी कि इस बनावटी दवाई को बनाने वाला कौन है और किसने इसके जरिये से लाखों रुपये करप्शन में कमाए हैं ? अगर सरकार इसका भी पता नहीं लगा सकती, तो फिर हम उससे और किसी बड़े काम की क्या उम्मीद कर सकते हैं ?

श्री मधु लिमये उपाध्यक्ष महोदय, एक सवाल ।

Mr. Deputy-Speaker: Order, order. I am not allowing. If I allow him I will have to allow three or four other Members also.

श्री मधु लिमये: कई बड़े अधिकारी आगे जाकर कम्पनियों के डायरेक्टर बन जाते हैं और कम्पनियां मुनाफा कमाती हैं । उसका भी जवाब आना चाहिए । सी० सी० देसाई हैं और जे० पी० सिंह भी होंगे —कई साहब हैं ।

डा० सुशीला नायर : उपाध्यक्ष महोदय, लोहिया जी ने जो यह सवाल उठाया है, उसके बारे में मैं यह कहना चाहती हूं कि ग्राइपवाटर के कुछ बेचिज ठीक नहीं हैं, स्यूरियस हैं, नकली हैं, यह शिकायत ट्रेड मार्क के मालिकों की तरफ से ग्राई थी । उसको लेकर क्या कार्यवाही की गई, क्या हो रहा है, यह सब कुछ हमने बताने की कोशिश की ग्रौर कुछ में बताने के लिए खड़ी हुई हूं । लेकिन इस को लेकर बहुत बड़ा विस्तृत रूप लोहिया जी ने देने की कोशिश की है ग्रौर दुनिया भर के करप्शन ग्रौर यह, वह, उसके साथ जोड़ने की कोशिश की है । वह ज़रा कुछ इस सवाल के दायरे से बाहर हो जाता है ।

मैं इतना ही कहना चाहती हूं कि हम लोग इस बारे में उतने ही उत्सुक हैं—बल्कि कुछ ज्यादा ही—जितने लोहिया जी । हम लोग भी ग्राखिर कुछ ग्रादर्श रखने वाले लोग हैं ग्रौर किसी को यह ख्वाहिश नहीं है कि किसी बेईमा को संरक्षण दिया जाये ग्रौर किसी नकली दवा बनाने वाले या बुरा काम करने वाले के खिलाफ़ कार्यवाही न की जाये । लोहिया साहब मुझ को कुछ थोड़ा सा नादान समझते हैं । मैं दाव-पेच नहीं समझ सकती हूं, ऐसा वह बताते हैं । तो मुझे वह स्वीकार है । वह बड़े भाई हैं, विद्वान् हैं । मैं इकानोमिक्स ग्रौर हिसाब-खाता कुछ बहुत ज्यादा नहीं जानती हूं, लेकिन मैं दवा के बारे में जरूर जानती हूं—बच्चों की दवा के बारे में भी ग्रौर बड़ों की दवा के बारे में भी ग्रौर ग्रगर लोहिया जी को भी चाहिए, तो उसके बारे में भी ।

डा० राम मनोहर लोहिया : मेरा दिल तो ग्राज-कल इतना खराब है कि मुझे भी दवा चाहिए ग्राप से ।

डा० सुशीला नायर : यह जो एंग्लो-थाई कार्पोरेशन है, ये हैं ट्रेड मार्क के ग्रोनर्ज ग्रौर कुछ ऐसा उन लोगों का हिसाब है कि वे दवा बनाते हैं. . .

Messrs. Anglo-Thai Corporation, Bombay are the owners of the trade-mark of Woodward Gripe Water. They make use of the manufacturing facilities available with Messrs. Orient Pharma Private Limited who also hold a separate manufacturing licence under the Drugs and Cosmetics Act and get the preparations made by them. Messrs. T. T. Krishnamachari & Co., are their distributors, distributors of this gripe water for the southern zone. They have three other distributors for other zones. Dr. Lohia's charge is that the spurious drug was probably made in collusion by these two or three people together in order to make money. And when I expressed surprise how the owners and the manufacturers themselves could do such a thing, Dr. Lohia explained it on the basis of my ignorance. Sir, I do not deny that I am ignorance about many things. But I do know this, that there is a procedure by which very strict scrutiny is made before a manufacturing licence is given. Then, the manufacturers are expected to keep a record of the analysis of each batch of drugs that they prepare, and our inspectors make surprise checks to see that everything is going on all right, according to the rules. So, under such strict conditions of vigilance, checks and counter-checks, it is rather unlikely that *bona fide* licensed manufacturers would deliberately manufacture and distribute for sale spurious drugs with a view to make more profits. . . . . .

श्री मधु लिमये : ग्राप ग्रनुमान के ग्राधार पर बोल रही हैं या ग्रापने जांच की है ?

Dr. Sushila Nayar: Please, let me finish.

. . . . . or even to evade income-tax. I wish to say that the price of these drugs is mostly due to the trade name and the goodwill that a particular product has earned. For the manufacturers to risk losing all that goodwill by doing a thing of that sort, trying to damage themselves, trying to cut one's nose to spite the face, I do not think the businessmen

are so foolish as that and they are not likely to do it.

It is a well-known practice for the fake-makers to fake those things which have become so popular among the people; and they have become popular because these manufacturers carry on a lot of publicity and propaganda.

Shri Joachim Alva (Kanara): Does the hon. Minister know that an international firm like Parke Davis was held guilty of violation of the Custom Act?

Dr. Sushila Nayar: Shri, Joachim alva is letting his imagination go completely off the mark. A customs offence is completely different from an offence of manufacturing spurious drugs.

डा० राम मनोहर लोहिया: आप अभी तक इसका पता क्यों नहीं लगा पाई हैं ?

श्री मधु लिमये : आप अनुमान के आधार पर क्यों बोल रही हैं ?

Dr. Sushila Nayar: Apart from this, the second point that I wish to submit for the consideration of Dr. Lohia is that a high-powered committee worked for nearly a year, it contacted and interrogated a large number of people, manufacturers, traders, scientists and so on and it gave its verdict that spurious drugs are not being made by licensed manufacturers but by unlicensed manufacturers like thieves or cheats.

A question that may be asked is whether we have been able to lay our hands on the spurious manufacturers. But every offender is not always discovered. All that I can say is, it was in the light of this that we took steps to make lists of licensed manufacturers all over the country, and we have made it an offence for products which are produced by licensed manufacturers to be sold by anyone and whoever trades in these products is brought to book.

डा० राम मनोहर लोहिया : एंग्लो-थाई कार्पोरेशन और वुडवर्डज वाइप वाटर कम्पनी की जो विदेशी मुद्रा लन्दन में जाकर जमा होती है, वह किस हिसाब से दोनों में बांटी जाती है ? वहां कितना जमा होता है ?

डा० सुशीला नायर : मेरा काम तो दवा की क्वालिटी को सही रखना है । मैं लोहिया साहब के सामने स्वीकार करती हूं कि विदेशी मुद्रा का हिसाब मेरी समझ में से थोड़ा ऊपर है । जिनसे वह ताल्लुक रखता है, अगर वह उनसे पता लगायें, तो अच्छा होगा ।

डा० राम मनोहर लोहिया : श्री कृष्णमाचारी को कहा गया था कि वह यहां पर रहें ।

श्री किशन पटनायक : मेरा पायंट आफ़ आर्डर है ।

Dr. Sushila Nayar: May I now try to conclude?

श्री किशन पटनायक : मैंने इस बात का आग्रह किया था कि फिनांस मिनिस्टर यहां पर मौजूद रहें, क्योंकि इस सवाल का ज्यादा सम्बन्ध उनसे है ।

Mr. Deputy-Speaker: I am not allowing that point of order.... (*Interruptions*).

Dr. Sushila Nayar: I wish to say that it is highly unfair to involve the Finance Minister in this manner. If they have any proof against any one of us, let them bring them up and whatever action is necessary will be taken. We are not afraid of being exposed for anything that any of us might have done. If we have done wrong, hang.... (*Interruption*). But it is extremely improper to bring in indirect insinuations and try to bring in the Finance Minister at every step. The matter does not concern the Finance Minister. It is a matter of spurious products. It is Drug Control Administration of the Madras Government and, to some extent, the Drug Control Administration of the Health Ministry that are concerned. Therefore, let us talk of the matter of spurious products.

[Dr. Sushila Nayar]

18 hrs.

I wish to say that there were these three batches and the complaint was made by the Anglo-Thai Corporation. Cases have been instituted against several traders and action has been taken in a number of places. We know of the districts where these drugs are circulating in the States of Andhra Pradesh, Maharashtra, Mysore etc. Press notes have been given that whoever sees these batches should immediately report to the authorities.

Shri Hari Vishnu Kamath: Why only two? All the three were not seized. Only two were seized according to your own statement or answer. What about the third batch?

Dr. Sushila Nayar: Since I made that statement a third batch has come to light and I can give you the numbers of those batches if you would like to have them.

Shri Hari Vishnu Kamath: That you gave last time itself, but you said that the State authorities seized only two batches and not all the three batches. What about the third batch? See the main answer on the last occasion.

taken in a number of places. We had given that answer..... (*Interruption*).

Shri Joachim Alva: Why does not Government, through its Hindustan Antibiotics or any other concern, manufacture cheap gripe water costing eight annas or so for poor children?

Dr. Sushila Nayar: Shri Joachim Alva is unnecessarily confusing antibiotics etc. with gripe water. Gripe water is a carminative mixture. It contains some very simple things. It is popular because of the high pressure publicity; otherwise if you boil ordinary *onf* and *ajwain* in water and give to the children it will be equally good and the poor people do it all the time. But when we have a product, it is necessary that nobody plays with that product and spurious substances are not brought on the market. That is why we have taken serious action against the people who are dealing with this and cases have been instituted.

Shri Kishen Patnayak: What is the serious action that you have taken and against whom?

Dr. Sushila Nayar: Against all those people who have been found.

श्री मधु लिमये : एक विशिष्ट उदाहरण दिया गया है, उस पर बोलें ।

Mr. Deputy-Speaker: Hon. Member cannot get up and go on like that. आराम से सुन लीजिये ।

डा० सशीला नायर : जहां जहां पर यह दवा मिली है वहां वहां पर स्टेट आथोरिटीज ने एकशन लिया है ।

In Andhra, drug inspectors of Rajahmnudry, Vijayawada and Nellore have seized stocks of spurious products and prosecution proceedings against dealers are in progress. Investigations made at Kurnool have so far proved futile. Manufacturers of the spurious products have not been located despite intensive investigations. The authorities in the suspected pockets have been alerted to be watchful.

In Orissa, stocks of spurious products labelled with Batch Nos. 72M 463 and 4M 463 have been seized at Khurda and Rambha and samples sent for test to the Central Drugs Laboratory, Calcutta. The Government have issued a Press Note to stop the purchase and sale of these two batches and another batch of spurious

products, that is, 86M 762 which they had also come across.

Shri P. Venkatasubbaiah (Adoni): In spite of the vigilance exercised and the investigations going on, it is no denying the fact that in many places these spurious drugs are in vogue.

Mr. Deputy-Speaker: She is answering that question.

Dr. Sushila Nayar: I wish to say that so far as this product is concerned, it has gone in certain districts in the States that I have mentioned and action has been taken in every one of them. Analysis has been made and we have found that sodium bicarbonate contents and some other things are a little less in quantity than they should be. The Anglo-Thai Corporation, who are responsible for the quality control of this medicine being the owners of the trade mark, have released the batches after testing that they are of the right quality. Every batch has been analysed and the records are there in the company's books. Therefore, to say that it might have been done by the wholesale is not correct.

As far as the prices and the profits are concerned, all that I can say is that price control is not with us but certain laws, commodity controls, etc. regulate those prices. The Health Ministry has taken the initiative to see that the prices of drugs are frozen on the level of 1st April, 1963. Beyond that, we have also tried to investigate the cost of production, the sale price and the profit etc. of certain life-saving drugs. We are going into that and we would very much like that the prices of drugs are kept at as reasonable a level as possible so that the common man, the masses, in the country can have quality drugs at reasonable prices which they can afford.

श्री मधु लिमये : पिम्परी में शुरूआत करें, वह तो सरकारी क्षेत्र में है ।

Dr. Sushila Nayar: I am glad that the hon. Member has brought in Pimpri factory. They have done a magnificent job. I want to take this opportunity to give them a public complaint. Before Pimpri factory came into being, the price of penicillin was terrifically high and the price was brought to a fraction of what it used to be before. In spite of the fact that they have lowered the prices several times, there are substantial profits. Those profits are being ploughed back into the public sector enterprise so that besides penicillin we are today producing streptomycine and several other drugs in that company. (*Interruption*).

श्री मधु लिमये : बीमारी के आधार पर पुंजीकरण न कीजिए ।

Dr. Sushila Nayar: Surely, the hon. Member should appreciate that here is an instance where the public money is going back for the service of the public and not into the pockets of a few people. As a matter of fact, it is as a result of our experience at Pimpri that we have extended the public sector production of drugs and we are also able to say to the trade that there are substantial profits and they can afford not to raise the prices and if possible reduce them.

Sir, I am grateful to Dr. Lohia for raising this discussion because it has given me an opportunity to explain the position. I hope he will agree with me that so far as the spurious drugs are concerned, the Government is doing everything possible and is determined to do evrything possible to put them down.

Shri Hari Vishnu Kamath: Why was the third batch not seized? That point remains unanswered.

Dr. Sushila Nayar: Wherever the Inspectors see that it is being sold, it

[Dr. Sushila Nayar]

is taken up. In the first instance, they might have received the samples of two batches but later on they received samples of the third batch also.

Shri Hari Vishnu Kamath: Look up the answer that you gave last time—your own answer.

Mr. Deputy-Speaker: The House stands adjourned to meet again tomorrow at 11 A.M.

18.10 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Friday, May 7, 1965/Vaisakha 17, 1887 (Saka).

GMGIPND—LS II—596 (Ai) LSD—8-6-65—970.